REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

जगदीश चन्द्र कृत: प्रतीकवादी शिल्पविधि प्रधान उपन्यास

नवजोत कौर[1] , डॉ. विनोद कुमार[2]
[1]अनुसंधित्सु, समाज विज्ञान एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी (पंजाब)
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी (पंजाब)

प्रस्तावना:

प्रतीकवादी शिल्प-विधि एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसे उपन्यासकार ने अपने भावों और विचारों की अधिकतम अभिव्यक्ति के माध्यम रूप में ग्रहण किया है। भावों और विचारों में उलझकर उपन्यासकार मानसिक स्तर को साधारण से कुछ ऊंचा कर, एकाग्र चित होकर अपने अनुभवों को भिन्न-भिन्न संकेतों के द्वारा अभिव्यक्ति देता हैं। हिन्दी साहित्य कोश में प्रतीक को परिभाषित करते हुए, स्पष्ट किया गया है , कि "प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य अथवा गोचर वस्तु के लिए किया जाता है , जो किसी अदृश्य या अप्रस्तुत विषय का प्रति-प्रधान एवं उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है, अथवा कहा जा सकता है, कि किसी अन्य स्तर के समान रूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है।"[1]

भाव प्रतीकवादी शिल्प-विधि के पीछे शब्द प्रतीक की अमोघ शक्ति से जब किसी मनोदशा को अभिधा शक्ति द्वारा प्रस्तुत करना कठिन होता है, तभी इसकी योजना की जाती है। प्रतीक-योजना द्वारा, वस्तु को अप्रत्यक्ष रखकर केवल अभिभावक के माध्यम से परोक्ष और एक सीमा से खींचकर निकट ले जाया जाता है। प्रतीक एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा हमारे विभिन्न अनुभवों से युक्त होने के कारण अदृश्य, अगोचर और नितांत ग्रहय मनोभावों को भी साकार मूर्त रूप देते हैं। हिन्दी के प्रतीकवादी उपन्यासकारों के द्वारा जीवन का मूल्यांकन ही प्रतीकात्मक विधि से किया गया है। उन्होंने मनुष्य को दिखाने वाले स्वप्नों में प्रतीक खोज निकाले हैं। मध्यवर्ग की आवश्यकताओं, मान्यताओं एवं रूढ़ियों को प्रतीकात्मक विधि के द्वारा उपन्यास साहित्य में स्पष्ट रूप में लाकर हमारे बीच रख दिया है। इस सम्बन्ध में आलोचक शिवदान सिंह चौहान कहते हैं, कि "प्रतीकवादियों ने साहित्य या कला में प्रकृतवाद और रूपगत रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह करके प्रतीकों के माध्यम से भावों, विचारों और मन-स्थितियों को अभिव्यक्ति देने पर ज़ोर दिया और इसके लिए बात सीधे न रहकर सांकेतिक भाषा में व्यक्त करने की प्रणाली अपनाई।"[2] भाव इस विधि के उपन्यासों में विषय वस्तु विन्यास, व्यक्ति वाणी, वातावरण, विचार सब प्रतीक का आश्रय बनकर अभिव्यक्ति होते हैं। उपन्यास में प्रतीक का प्रयोग समाज की सामाजिक स्थितियों, परिस्थितियों, दशाओं और उसकी अच्छाइयों-बुराइयों को सीधे रूप में न स्पष्ट कर प्रतीकों के सहारे अभिव्यक्ति करने का प्रयास किया जाता है। डॉ. शांति स्वरूप गुप्त के अनुसार "प्रतीक किसी अनिश्चित वस्तु,भाव या विचार का संकेत करता है, प्रतीक के प्रयोग द्वारा लेखक अगणित भावों और विचारों को समेट लेता है, जो सामान्य भाषा द्वारा अभिव्यक्त नहीं हो सकता, उसका निर्देश करता है।"[3] प्रतीक को दो

रूपों में देखा जाता है- लघु प्रतीक और प्रौढ़ प्रतीक। प्रौढ़ प्रतीक का महत्व समूची कृति में होता है, वहीं लघु प्रतीक का महत्व परिस्थितिगत होता है। भाव वे एक या दो दृश्यों में आते हैं। प्रतीक आधुनिक साहित्य की उत्तमता की कसौटी बनता जा रहा है। उपन्यासों में प्रतीकात्मक शिल्प पाठक के हृदय को गहराई के साथ स्पर्श करते हैं। प्रतीकात्मक शिल्प-विधि में मानवेतर पात्रों का चयन किया जाता है तथा साथ ही उपन्यासकार प्रतीकों को स्पष्ट करने के लिए व्याख्या भी देते चलता है। प्रतीकात्मक पात्र, विषय, घटनाएँ, परिवेश आदि के द्वारा मनुष्य जीवन के यथार्थ और सामयिक समस्याओं की पड़ताल की जाती है। जगदीश चन्द्र हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार हुए हैं। उनके उपन्यास 'आधा पुल', 'टुंडा लाट' और 'लाट की वापसी' प्रतीकवादी शिल्पविधि प्रधान उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यासों में राजनीतिक व सामाजिक स्थिति पर व्यंग्य करते हुए नग्न यथार्थ प्रस्तुत किया गया है। इनमें पात्र प्रतीकात्मक एवं कथानक यथार्थवादी है। समाज के नग्न यथार्थ को जिस रूप में इन उपन्यासों में व्यक्त किया गया है, वहीं उपन्यास शिल्प की दृष्टि से उपयोगी वस्तु है। इनका सविस्तार अध्ययन, इस प्रकार है:

टुंडा लाट

जगदीश चन्द्र का उपन्यास 'टुंडा लाट' 1978 में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास 'आधा-पुल' उपन्यास के बाद में रचा गया। जो 170 पृष्ठों में वर्णित है। प्रस्तुत उपन्यास विस्तार के अनुसार न तो अधिक संक्षिप्त है, न ही अधिक विस्तृत। यह एक घटना प्रधान उपन्यास है। प्रतीकात्मक शिल्प-विधि के आधार पर विषय-विस्तार सूत्रात्मक है। इसके परिवेश चित्रण में महानगर, शहर, गांव आदि आए हैं तथा प्रस्तुत उपन्यास फौजी जन-जीवन पर आधारित उपन्यास है।

'टुंडा लाट' उपन्यास का कथानक दो उपन्यासों (टुंडा लाट और लाट की वापसी) में विभक्त है। इसके कथानक में घटनाओं का गुंफन तथा विचारों की अधिकता है। 'टुंडा' भाव 'टूटा' तथा 'लाट' भाव हाथ। इन प्रतीकों के बीच ही कथा का विस्तार होता है। यह उपन्यास अधूरे-जीवन का प्रतीक है। कथानक कैप्टन सुनील के जीवन पर आधारित है। वह एक आर्मी अफसर है, जो अपनी छुट्टियों के समय 'सरस्वती नैशनल स्कूल ऑफ म्यूजिक' में दाखिला लेता है। वहीं उसकी पहचान म्यूजिक के विद्यार्थियों के साथ होती है, जिनके साथ वह अपने जीवन के कई नए अनुभवों का जीवनयापन करता है। कथा का विस्तार तब होता है, जब आर्मी की ओर से युद्ध लगने हेतु पत्र मिलता है। वह अपनी छुट्टियाँ बीच में ही छोड़ मित्रों से विदा लेता है। ट्रेनिंग-सेंटर में दो सप्ताह का कंडेस्ड रिफ्रेशर कोर्स पूरा करने की बाद सुनील की भर्ती एक रेजिमेंट में हो जाती है। लड़ाई के दौरान सुनील के टैंक पर गोले फेंके जाने के कारण, वह अपना एक हाथ खो देता है। उदाहरण दृष्टव्य है, "अपने हाथ में उसे बहुत तेज दर्द और जलन महसूस हो रही थी, जैसे वहां जलती सलाखों से दाग दिया हों।"[4] उपन्यासकार के द्वारा दिखाया गया है, कि देखने पर भले ही आर्मी की सहूलते अधिक प्रतीत होती है, परंतु उनका जीवन खतरे के अंधेरे के अधीन घिरा रहता है। कथा का विस्तार तो तब होता है, जब सुनील के सामने जीवन का वास्तविकता आती है। बिना हाथ उसे आर्मी में कोई जगह नहीं मिलती। एक हाथ के कारण उसकी वायलन बजाने का स्वप्न भी अधूरा रह जाता है। युवक होते हुए भी तथा देश के लिए कुर्बानी देने पर भी, वह बेरोज़गारी से लड़ता है। उसका टुंडा हाथ राजनीतिक प्रशासन के न्याय पर कड़ा व्यंग्य है। उपन्यास में आर्मी के सैनिक नि: स्वार्थ भाव से युद्ध कर, देश की रक्षा करते हैं, तो वहीं उनके जख्मी होने या अपने शरीर का कोई अंग खो देने के बाद, उन युवकों को मजबूरी एवं तंगी का सामना करते दिखाया गया है। टुंडा लाट शारीरिक अपूर्णता का प्रतीक है। जिसके माध्यम से उपन्यासकार के द्वारा राजनीतिक व सरकार की नीतियों का नग्न यथार्थ प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों की संख्या कथानक के विस्तार को देखते हुए सही है। मुख्य पात्र के रूप में सुनील, रोमिला है तथा गौण पात्रों के रूप में डॉ. रामामूर्ति, कृपालु, शंकर, सुजाता, डॉ. तिवारी, हाकिम सिंह, मेजर जलाली और कर्नल मान है। सुनील उपन्यास में पहले पन्ने से लेकर अंतिम पन्ने तक छाया हुआ है। सुनील उपन्यास का प्रतीकात्मक पात्र है। उसका टूटा हाथ अपूर्णता और प्रशासनिक भ्रष्टाचार के संदर्भ में व्यंग्यात्मक्ता का प्रतीक है। 'लाट' का अर्थ रोशनी से लिया गया हैं। सुनील का हाथ टूट जाने पर काम के सम्बन्धी अनेक अर्ज़ियाँ देने पर भी उसे बेरोज़गारी का सामना करना पड़ता है। हाथ खो जाना, उसके जीवन में अंधेरे का सूत्रपात करता है। सुनील के प्रति व जीवन की कठिनाइयों के प्रति लड़ जाने के प्रवृति उपन्यास को

एक गति प्रदान करती है। उपन्यास का पात्रांकन शिल्प प्रतीकवादी है, परंतु इसका विषय यथार्थवादी है। पात्रांकन शिल्प इस उपन्यास के लिए महत्वपूर्ण बन गया है, क्योंकि उसके द्वारा कथानक का विकास होता हुआ दिखाई देता है तथा उद्देश्य का उद्घाटन व परिवेश भी कथानक में निर्मित होते हुए दिखाई देता है।

संवाद शिल्प का प्रयोग बहुत कलात्मक एवं स्वाभाविक है। संवादों द्वारा जगदीश चन्द्र के द्वारा कथानक का विकास, चरित्र-चित्रण एवं घटनाओं के स्पष्टीकरण का काम किया गया है। संवाद का प्रयोग आवश्यकतानुसार और यथोचित किया गया है। उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल, परिस्थितिनुकूल, प्रदेशानुकूल तथा उद्देश्य प्रधान हैं। उपन्यास में आर्मी की शब्दावली के प्रयोग सशक्त ढंग से किया गया है। अंग्रेजी के शब्दों की भरमार उपन्यास में देखी जा सकती है। जैसे-

"मैन द टाइम हैज कम टु स्विंग इंटु एक्शन। अपना टैक पेड़ों से बाहर निकाल लो। जहां गैप नजर आए इसे फिल करने की कोशिश करो। याद रखो..... एक का मुक़ाबला तीन से है। ऑल द बैस्ट। ऑल आनर्ज टु अस।"[5] उपन्यास का संवाद शिल्प सार्थक है।

परिवेश शिल्प की दृष्टि से उपन्यास सफल बन पड़ा है। प्रस्तुत उपन्यास में देश काल तथा वातावरण का विस्तृत चित्रण मिलता है। उपन्यास में आधुनिक महानगरीय खान-पान और रहन-सहन को दिखाया गया है। रोमिला सुनील के साथ डिनर पर जाती है, "चिकन सूप दो प्लेट, फिश कटलेट दो प्लेट, बटर स्लाइस, तंदूरी चिकन एंड काफी।"[6] उपन्यास में आधुनिक खान-पान का अधिक जिक्र आया है। पहरावे के आधार पर रोमिला मार्डन कपड़े पहनना अधिक पसंद करती है। वह मैक्सी, साड़ी पहनना अधिक पसंद करती है।

भाषा शिल्प की दृष्टि से इस उपन्यास की भाषा साधारण एवं सहज है। भाषा पात्रानुकूल है। भाषा शिल्प में अस्वाभाविकता कहीं भी नहीं आ पाई। जगह-जगह पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे- "मयूजिक, वायलिन, ट्यून, सेन्स, काफी, सिप, वेटर, टेक इट इजी, मेम, रेस्तरा, ट्रेफिक, कंट्रोल, लेंज, लाइनों"[7] आधुनिक जनजीवन पर आधारित होने के कारण उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का भरपूर मात्रा में प्रयोग किया गया है। इसके इलावा आर्मी में प्रयोग होने वाले शब्द जैसे- "ट्रप-कमांडर, लेफ़्टिनेट, मिडल, विकेट, वन-ट्रप, फलैक, टैंक, एक्शन, व्यू"[8] का प्रयोग भी उपन्यासकार के द्वारा आकर्षक ढंग से किया गया है।

'टुंडा लाट' उपन्यास का उद्देश्य राजनीतिक और सामाजिक विसंगतियों का नग्न चित्रण प्रस्तुत करना है। लड़ाई में हाथ खो देने के कारण सुनील को सरकार की ओर से कोई खास सुविधा नहीं मिल पाती। वहीं दूसरी ओर घर वापिस आने पर आस-पड़ोस के व्यंग्य, बेरोज़गारी, मयूजिक स्कूल की रोमिला व अन्य सहयोगियों का सुनील के प्रति व्यवहार एक सिपाही की कुर्बानी का नाम नग्न चित्रण है। देश के लिए कुर्बानी देने पर एक सिपाही को हाथ खो देने की वजह से अधूरी दृष्टि से देखा जा सकता है तथा उसकी अपाहिजता को आधार बनाकर सुनील को किसी प्रकार की भी मदद देने के लिए असमर्थता दिखाई गई है। डॉ. जयनाथ नलिन के अनुसार , "श्रेष्ठ प्रतीक वही है , जो प्रयोजनीय या कलाकार द्वारा अभिलाषित आभ्यन्तरिक गह्वय , अप्रत्यक्ष, अमूर्त का उद्घाटन करे। "[9] अत: प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार के द्वारा सरकार और राजनेताओं की नीतियों का सपाट व कटाक्षपूर्ण वर्णन किया गया है। इस उद्देश्यपूर्ति को ध्यान में रखकर ही, जगदीश चन्द्र ने अपने उद्देश्य का प्रतिपादन प्रतीकात्मक ढंग से किया है।

लाट की वापसी

'लाट की वापसी' उपन्यास सन 2000 में जगदीश चन्द्र की मृत्यु के उपरांत प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास 180 पृष्ठों में वर्णित है। यह उपन्यास 'टुंडा लाट' के बाद प्रकाशित हुआ तथा दोनों उपन्यासों में एक ही कथा का सूत्रपात हुआ है। पहले उपन्यास में शुरू हुई कथा प्रस्तुत उपन्यास में पूर्ण होती है। प्रस्तुत उपन्यास व्यंग्यात्मक प्रतीकवादी रचना है। इसमें कथा माध्यम से समकालीन भारतीय समाज में व्याप्त बेरोज़गारी तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार का चित्रण और आलोचना की गई है। प्रस्तुत उपन्यास में कथानक अनेक प्रसंगों एवं घटनाओं से गुंफित है। मुख्य कथा सुनील के जीवन की है, जो न्याय पाने के लिए नीचे से ऊपर तक की दौड़ लगाता है, परंतु जैसे-तैसे वह आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे उसके हाथ सिर्फ निराशा ही लगती है। प्रस्तुत

उपन्यास में टुंडा लाट उपन्यास की कथा का आगे विस्तार होता है। आर्मी अफसर सुनील, अपने रिश्तेदारों व मित्रों के व्यवहार से तंग आकार खुद को घर में छिपाने व बंद रखने का प्रयास करता है। जिसमें वह सफल नहीं हो पाता। हाथ की अपाहिजता उसका साहस तोड़ देती है और वह अपने हाथ कट जाने पर शर्म महसूस करता है। वहीं दूसरी ओर घर बैठने पर भी लोग उसे जीने नहीं देते तथा उसके माता-पिता के सामने जवान अपंगता और बेरोज़गारी पर व्यंग्य कसते हैं। कुछ समय खुद को कमरे में बंद रखने के बाद सुनील घर व बाहर वाले की बातों से तंग आकार घर छोड़ने का निर्णय करता है। वह एक नौकरी भी ढूंढ लेता है। कथा का विस्तार तब होता है, जब वह अपना सब कुछ छोड़ कर अपनी अपंगता को छिपाने के लिए बर्फीले पहाड़ों में छिपने का प्रयास करता है। वहाँ जाकर भी वह अपने सहकर्मियों से कोई बात नहीं करता तथा संसार से कटा हुआ महसूस करता है। सुनील के शिष्टाचार व राजनीतिक कटाव पर व्यंग्य करता हुआ, उपन्यास का पात्र मेजर राजा गोपालन कहता है

"तुम्हारा बायोडाटा मुझे चार दिन पहले मिला था। मैंने उसे पढ़कर अपने पास रख लिया था। इसलिए, कि तुम अफसर रहे हो। यह बदकिस्मती की बात है, कि तुम जख्मी हो गए, और दायां हाथ जाता रहा।..... मैं उन दिनों पूर्वी सैक्टर में था। लड़ाई में कुछ भी हो सकता था। यहाँ गीता का उपदेश याद आ जाता है। 'तुम अपने कर्तव्य का पालन करो, फल की इच्छा मत करो।"[10]

सुनील बेरोज़गारी और अपनी अपूर्णता पर इतना खेद करता है, कि वह बर्फीले तूफान में घर से निकल पड़ता है। इस तूफान में अपराध-बोध को छिपाते हुए, वह आत्म-हत्या करने का प्रयास करता है, परंतु उसके साथी कड़ी मेहनत से उसे बर्फ के तूफान की लपेट से वापिस आने में सफल हो जाते हैं, परंतु सुनील की मन-व्यवस्था अधिक दुर्बल प्रतीत होती है। समय बीतने के साथ सुनील के व्यवस्था में तो सुधार आ जाता है, परंतु उस की मानसिक स्थिति और भी भयावह होती चली जाती है। 'लाट की वापसी' भाव टूटे हुए हाथ के जुगाड़ की रोशनी उत्पन तब होती है, जब सुनील के साथ रहते सूबेदार सरदारा सिंह मौलाबख्श के द्वारा उसकी पीड़ा को समझते हुए, नकली हाथ बना, उसकी मारी इच्छाओं को जिंदा करने का सफल प्रयास किया जाता है। लोहे का हाथ पाकर सुनील मन की मर चुकी रुचि को जगा वायलन बजा, अपने मन का लाट(रोशनी) भाव जीने की इच्छा का पुन: संचार करने में सफल हो जाता है। लाट(रोशनी) व टूटे हाथ का प्रतीक है। जिसके माध्यम से उपन्यासकार के द्वारा मरी इच्छाओं का पुन: सूत्रपात होता हुआ दिखाया है, तो वहीं दूसरी ओर राजनीतिक असुविधा का नग्न चित्रण करते हुए, सामाजिक व राजनीतिक दुर-व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। सुनील की मानसिकता को उद्घाटित करती उदाहरण दृष्टव्य है-

"वह बिस्तर पर बैठा वायलिन को दायें कन्धे से टिकाए गज को पकड़ लेने की कोशिश कर रहा था। उसके चेहरे पर अजीब-सा उकसाव, उत्सुकता और भय झलक रहा था। गज को पकड़ सुनील ने आँखें मूंद लीं , कि वह किस ईष्ट या व्यक्ति-विशेष को याद कर अपनी कोशिश शुरू करे। उसकी आँखों के सामने भगवान के कई रूप और चेहरे घूम गए।"[11]

प्रस्तुत उपन्यास का पात्रांकन शिल्प प्रतीकवादी है। जिसमें कुछ पात्र सामाजिक कटाक्ष का प्रतीक हैं, तो कई राजनीतिक षड्यंत्रकारी पात्र। सुनील इस उपन्यास का मुख्य पात्र है, जिसके जीवन पर उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक आधारित है। यह पात्र सामाजिक घुटन, अलगाव व मानसिक शोषण का शिकार होते हुए दिखाया गया है, जो सामाजिक दाब-दबाव के कारण अपने जीवन को बोझिल अनुभव करता है। सुनील के इलावा उसके पिताजी, माता जी, बिशनदास, कर्मपाल, गुप्ता जी, मेजर राजगोपालन, सूबेदार धनी सिंह, कैप्टन पठानिया, नेगी, मौलाबख्स, सरदारा सिंह, नत्थासिंह, सूबेदार नेमीसिंह आदि पात्र है। जिनकी सहायता से कथानक अपना विकास करता हुए, रोशनी भाव लाट की आशा को पुन: जगाने में सफलता प्रदान करते हैं। सुनील का टुंडा हाथ, प्रतीकात्मक पात्र पात्रांकन-शिल्प की एक उदाहरण है। अत : 'लाट की वापसी' में प्रतीकात्मक पात्रांकन-शिल्प सशक्त रूप में चित्रित हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास में कहीं-कहीं संवाद बहुत बड़े-बड़े किन्तु स्वाभाविक बन पड़े हैं। संवाद-शिल्प का चित्रांकन तथा कथानक के विकास में अच्छा प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं संवाद व्यंग्यात्मक रूप में आए हैं। उपन्यास में संवाद-शैली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया गया है। जगदीश चन्द्र के द्वारा संवादों के माध्यम से अपने प्रतिपाद्य को उद्घाटित किया है। बदलते समय

के संदर्भ व्यंग्य करते हुए बाबू जी बताते हैं, कि "औलाद नालायक निकले, तो माँ-बाप कैसे तंदरुस्त रह सकते हैं.....बेटी का झगड़ा सास से चलता है, घर में बहू हर समय महाभारत जारी रखती है। बेटा कुलवंत अपनी पत्नी का साथ दे रहा है। लगता है, जल्दी घर का बंटवारा होकर रहेगा।"[12] कहीं-कहीं पर बड़े-संवादों का प्रयोग किया गया है, परंतु कई स्थानों पर इतने छोटे संवादों का प्रयोग किया गया है, कि जिसको पढ़कर भी पाठक बात को आसानी से समझ सकते हैं। उदाहरण देखिए-

"आप कहाँ से आए है?
'चंडीगढ़ से।
'रैंक क्या है, आपका'
"मैं स्टोर सुपरवाइज़र एप्वाइंट होकर यहा आया हूँ?" [13]

संवादों की दृष्टि से उपन्यास का कथानक प्रभावशाली बन पड़ा है,क्योंकि उपन्यास में प्रत्येक प्रकार के छोटे-बड़े दरमयाने संवाद दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में देशकाल एवं वातावरण की दृष्टि से, जो प्रयोग किया गया है। वह कथानक के अनुकूल है। इसका परिवेश घटनाओं के अनुकूल निर्मित हुआ है। जगदीश चन्द्र ने परिवेश-शिल्प का प्रयोग इतनी सूक्ष्मता से किया है, कि प्रसंग आँखों के सामने खड़े हो जाते हैं। जैसे-

"धीरे-धीरे चलते हुए, वे एक छोटी बैरक के निकट पहुँच गये, बैरक के एक ओर टीन की चादरों का एक शैड था। इसमें जीप खड़ी थी। बैरक के एक हिस्से के सामने बरामदा था। यहां स्टूल पर खाकी वर्दी पहने एक व्यक्ति बैठा था। उस पर लाल बजरी भी बिछी हुई थी।"[14]

'लाट की वापसी' उपन्यास की भाषा-शैली का प्रयोग आधुनिक है। इस उपन्यास की भाषा और संवाद पात्रानुकूल है। भाषा-शैली का गठन कथावस्तु और चरित्र-चित्रण के अनुकूल है। इसकी भाषा जन-साधारण की भाषा है। जिसको समझने में पाठक को सरलता होती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे यथार्थ का सूक्ष्म निरीक्षण और उसे प्रस्तुत करने की भाषिक क्षमता लेखक के पास मौजूद थी। प्रसंगों एवं दृश्यों का यथार्थ और सजीव रूप प्रस्तुत करने की कला से उपन्यासकार ने सफलता प्राप्त की है। जिसके चलते विवराणात्मक शैली के साथ फ्लैश बैक, पात्र आदि शैलियों की प्रयोग भी किया गया है। अपने जीवन के उतार-चढ़ाव पर सोचता हुआ, सुनील सोच में डूब जाता है। फ्लैश बैक शैली का एक उदाहरण-

"अगर लड़ाई में मर जाता, तो शहीद कहलाता, लेकिन मैं अपंग हो घर लौटा। जिंदगी भर के लिए नासूर बन गया। मेरे पिता मुझ पर बहुत नाराज थे। मेरी बेकारी को ले घर में हर समय तनाव रहता था , जो अकसर माँ और पिता के बीच कलह बन भड़क उठता था। मुझे भी पिता जी की बहुत-सी बातें सुननी पड़ती।'[15]

'लाट की वापसी' उपन्यास का उद्देश्य प्रतीकात्मक है। लाट भाव जीवन में नई ऊर्जा का पुन: उत्थान। जीवन से हताश व निराशा हो चुके, सुनील को अपने अस्तित्व तक को भुलाने का प्रयास करना पड़ता है। कोई भी सरकारी सहायता न मिलने के कारण तथा देश के लिए कुर्बानी देने पर भी बेरोज़गारी का सामना करना उसके लिए एक बड़ा संकट पैदा कर देता है। 'लाट की वापसी' उपन्यास खोई हुई, प्रतिष्ठा को प्राप्त करने का प्रतीक है। जगदीश चन्द्र के द्वारा यथार्थ की तस्वीर जनता के समक्ष या पाठक समुदाय के सामने अंकित की गई है। समाज में 'अच्छे काम का फल अच्छा होता है' की धारणा यहां कुछ असंगत प्रतीत होती है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार का उद्देश्य सामाजिक व राजनीतिक संजिशों के बीच भटकते एक कैप्टन की कहानी को प्रतीकात्मक आधार बनाकर सामाजिक यथार्थ और कुर्बानी के बाद की वास्तविकता को दिखाने का प्रयास किया गया है।

जगदीश चन्द्र के उपन्यास 'टुंडा लाट ' एवं 'लाट की वापसी ' प्रतीकात्मक शिल्प-विधि प्रधान उपन्यास है। उपन्यासकार के द्वारा प्रतीक का सहारा लेते हुए , उपन्यास की कथा को बड़ी सजगता से सींचा है। साधारण शब्दों में कहें , तो प्रतीकात्मक उपन्यासों में प्रतीक एक अर्थ समूह है , जो एक बार स्थिर होकर अपनी ओर अन्य बिन्दुओं को आकर्षित करता है। जगदीश चन्द्र के द्वारा प्रतीकवादी शिल्प-विधि की अभिव्यक्ति द्वारा चेतना के धरातल पर अप्रत्यक्ष को अधिकाधिक रूप में प्रस्तुत किया गया है अर्थात उपन्यासकार के द्वारा समाज की सामयिक स्थितियों , परिस्थितियों , दशाओं और उनकी अच्छाइयों-बुराइयों को (यथार्थ) सीधे-सीधे व्यक्त न करके, प्रतीकों के सहारे अभिव्यक्त किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश (ज्ञानमंडल लि॰ कांशी), पृ- 417
2. शिवदान सिंह चौहान, आलोचना के सिद्धांत (दिल्ली: राजकमल प्रकाशन), पृष्ठ 146-47
3. डॉ शांति स्वरूप गुप्त, उपन्यास: स्वरूप संरचना तथा शिल्प (दिल्ली: अलंकार प्रकाशन, प्र. सं. 1980) पृष्ठ 174
4. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड-तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011)) पृष्ठ 321
5. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड-तीन, (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 318
6. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड-तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 230
7. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड-तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 231
8. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड- तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 318
9. जयनाथ नलिन, साहित्य का आधार दर्शन (दिल्ली: आलोक प्रकाशन, 1976) पृष्ठ 180
10. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड-तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 419
11. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली , खण्ड-तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 549
12. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड-तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 382
13. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड- तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 422
14. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड- तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 416
15. विनोद शाही, जगदीश चन्द्र रचनावली, खण्ड-तीन (दिल्ली: आधार प्रकाशन 2011) पृष्ठ 528

नवजोत कौर
अनुसंधित्सु, समाज विज्ञान एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी (पंजाब)

LBP PUBLICATION